सेठ वालचंद हीराचंद के सम्मान में स्मारक डाक टिकट जारी करते समय प्रधानमंत्री का भाषण

23 नवम्बर, 2004
नई दिल्ली

वास्तव में मुझे इस बात की अत्यंत खुशी है कि मैं एक ऐसे समारोह में आपके साथ हूं जो संयोगवश हमारे देश में औद्योगीकरण के महान प्रवर्तक स्वर्गीय श्री वालचंद हीराचंद की 121 वीं जयंती के अवसर पर मनाया जा रहा है । उन्होनें हमारे व्यवसायी नेताओं की देशभक्ति, सृजनात्मकता व उद्यमशीलता को हमेशा सम्मान दिया, महत्व दिया, प्रोत्साहित किया और आज मैं उनके इस समारोह में शामिल होकर विशेष हर्ष का अनुभव कर रहा हूं । वालचंद हीराचंद एक स्वप्नद्रष्टा, कल्पनाशील, महान निर्माता व उद्योग जगत के महान नेता थे । इन सब बातों, अलावा, वह एक देशभक्त थे और अपने अलग अंदाज में हमारे स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्रोत थे। मैं उनकी स्मृत्तियों को नमन करता हूं ।

श्री वालचंद हीराचंद हमारे उप महाद्वीप में देशी औद्योगिक उद्यमों की दूसरी पीढ़ी के सबसे महान नेताओं में से थे । अपनी युवावस्था में उन्होंने अवश्य ही जमशेद जी टाटा जैसे प्रणेताओं से प्रेरणा ली होगी क्योंकि जिस समय वालचंद हीराचंद ने अपनी पहचान बनानी शुरू की थी उस समय ये लोग प्रतिष्ठित व्यवसायी नेताओं के रूप में स्थापित हो चुके थे । हालांकि श्री वालचंद हीराचंद ने जिस समय भारतीय उद्यम के क्षेत्र में नए युग का सूत्रपात किया था उस समय उनके समकक्ष या उनके बराबर कुछ ही व्यक्ति थे ।

श्री वालचंद हीराचंद जिस पीढ़ी के थे वह जी.डी.बिड़ला, श्री जे.आर.डी.टाटा, श्री पुरूषोत्तमदास ठाकुरदास व स्वर्गीय लाला श्री राम जैसे निष्ठावानों को तैयार करने वाली पीढ़ी थी - ये सभी लोग दूरदर्शी व महान उद्यमी थे । फिर भी, वालचंद हीराचंद में सबसे अलग कुछ खास बात थी । नए बदलावों व आधुनिक प्रौद्योगिकी के लिए उनमें जो जुनून था और हमारे देश में इनकी जड़े वास्तव में कैसे मजबूत हों इस बात के प्रति उनकी जो ख्वाहिश थी वह विरले ही मिलने वाली थी । उनको अपने बहुत से समकालीनों विशेषकर कोलकाता व कानपुर के व्यवसायी घरानों से जुदा बनाने वाला तथ्य यह था कि वह उस सांचे में ढले थे जिसे अर्थशास्त्री (शुम्पीटीरियन) मोल्ड कहकर परिभाषित करते हौं जोखिम लेने तथा अनजानी राहों पर कदम बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर ।

वास्तव में 1932 में विभेदक सुरक्षा नीति के अस्तित्व में आने के बाद विनिर्माण व्यवसाय में आए भारतीय व्यवसायियों पर यह आरोप लगाया गया कि वे केवल व्यापारी और साहूकार थे, उनका ध्यान विनिर्माण कार्य पर केन्द्रित नहीं था वे जोखिम उठाने वालों की बजाय मुनाफाखोर व सूदखोर अधिक थे । यह आरोप श्री वालचंद हीराचंद पर कभी भी नहीं लगाया जा सका । जोखिम उठाने के लिए वे सदैव तेयार रहते थे । पोत निर्माण, नौ व्यवसाय, वायुयान विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में उनकी पहल उनकी इसी उद्यमी वृत्ति का उदाहरण है । श्री वालचंद हीराचंद के व्यक्तित्व का यही वह पहलू है जिसकी प्रशांसा व सम्मान उनकी जयंती के अवसर पर अवश्य होना चाहिए । औद्योगिक युग में व्यवसाय के इतिहास के स्वर्णिम अध्याय इस बात से संबद्ध नहीं हैं कि व्यवसायी लाभ कमाने में कितने चतुर थे या हैं बल्कि इस बात से संबद्ध है कि वे

औद्योगिक नव परिवर्तन व विनिर्माण गतिविधियों के क्षितिज को विस्तार देने में कितने सक्षम थे। औद्योगिक उद्यम हमारे देश में जड़ें मजबूत कर सका इसका वजह संशयशील ब्रिटिश सरकार द्वारा 1930 के दौरान दी गई अल्प सुरक्षा मात्र नहीं थी बल्कि मेरा मानना तो यह है कि इसकी वजह सृजनात्मकता व साहसिकता की वह भावना थी जिसे लॉर्ड कीन्स ने महात्मा गांधी व पंडित जवाहर लाल नेहरू से प्रेरित नई भारतीय पीढ़ी का जुनून कहकर अभिव्यक्त किया । आधुनिक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हमारी यात्रा यहीं से शुरू होती है ।

कीन्स का मानना था कि अनिश्चिताओं से भरी हमारी दुनिया में, निवेश दोनों तरह का कार्य है विश्वास व्यक्त करने का भी और महान साहसिकता का भी । अनिश्चितताओं की दुनिया में निवेश के अर्थ को समझाने के उनके महा कार्य में बताए गए प्रबोधक वर्णन को मैं अब तक नहीं मूल पाया हूं, जहां उन्होंने कहा था कि यह मानव स्वभाव की विशेषता है कि हमारी अधिकांश सकारात्मक गतिविधियां स्वतः स्फूर्त उत्साह पर निर्भर करती हैं न कि गणितीय अनुमानों पर । चाहे ये गतिविधियां नैतिक हों, सुखवादी हों या आर्थिक हों, बहुत संभव है कि कुछ सकारात्मक करने का हमारा निर्णय और आने वाले दिनों में दिखाई देने वाला उनका प्रभाव जुनून का नतीज़ा हो । निष्क्रियता की बजाय कार्य करने का स्वतः स्फूर्त आवेग जो मात्रात्मक लाभों से प्रेरित नहीं होता हमारी मात्रात्मक संभाव्य क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है । भविष्य को प्रभावित करने वाले मानवीय निर्णय चाहे निजी हों, राजनीतिक हों या आर्थिक, कीन्स के अनुसार सिर्फ गणितीय अनुमानों पर निर्भर नहीं हो सकते हैं, क्योंकि ऐसी गणनाओं का कोई पुख्ता आधार नहीं होता है ……………। यह हमारी सक्रियता या रचनात्मकता संबंधी नैसर्गिक आवेग है जो जीवन को गति देता है ।

मैं आपके विचारार्थ यह कहना चाहता हूं कि श्री वालचंद हीराचंद जैसे व्यावसायिक नेता अन्य लोगों से इसलिए अलग नज़र आते हैं क्योंकि उनमें सक्रियता व रचनात्मकता का नैसर्गिक आवेग विद्यम्ाान था । लॉर्ड कीन्स के शब्दों में, कार्य करने का स्वतः स्फूर्त आवेग और वह भी उद्योग के जुनून से ओत प्रोत औद्योगिक विकास की दिशा निर्धारित करने वाला था । वे कोई अंतरंग पूंजीवादी नहीं थे, न ही अवैधानिक कार्य करने वाले व्यक्ति या लॉबीबाज़, न तो वे याचक थे और ने ही परमिट पाने के इच्छुक उन्होंने न तो इमदाद या कोटे की चाह की और न आगे आने वाली बाधाओं की बहुत परवाह की चुंकि वे उन बाधाओं को लांध कर विजय प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध थे । वे भविष्य दृष्टा थे उनकी सोच बहुत महान थी और उन्होनें भारत की इस समृद्ध भूमि के उज्जवल भविष्य के स्वप्न संजो रखे थे । वे उद्यमियों की अनेक पीढ़ियों के प्रेरणास्रोत रहे और केवल अपनी कड़ी मेहनत व रचनात्मकता के बलबूते पर आज के व्यावसायिक नेता बन गए हैं । श्री वालचंद हीराचंद सच्चे अर्थों में भारतीय परिवहन उद्योग की स्थापना के प्रणेता थे । हमारे ऑटोमोबाइल, हमारा वायुयान विनिर्माण व सामुद्रिक गतिविधियां व सामर्थ्य उनकी मार्गदर्शक व दूरदर्शी लगन के ऋणी हैं ।

मेरे ख्याल से श्री वालचंद हीराचंद का सबसे बड़ा योगदान जहाज़रानी या पोत निर्माण के क्षेत्र में रहा । वे इस क्षेत्र में भविष्य दृष्टा थे यह वास्तव में हमारी औद्योगिक नीति का एक अत्यंत निराशाजनक पहलू है कि हम इस क्षेत्र में श्री वालचंद हीराचंद द्वारा रखी गई नींव पर कोई इमारत नहीं खड़ी कर पाए । भारत का एक समृद्ध सामुद्रिक इतिहास है और पोत निर्माण के क्षेत्र में भी बहुत महत्वपूर्ण काम हुआ है, यह इतिहास की कोई अकस्मात घटना नहीं है कि एक विशाल नौगम्य सागर का नाम एक राष्ट्र के नाम पर हिन्द महासागर रखा गया है । यह

हमारे आस पास के सामुद्रिक जीवन में भारत द्वारा दिए गए योगदान का प्रमाण है । इन समुद्री क्षेत्रों में यूरोप वासियों के आने से प्रौद्योगिकी व नौवहन क्षमता तथा व्यापारिक गतिविधियों, दोनों में ही हमारी इस समृद्ध परम्परा को नुकसान पहुंचा । इतिहासकारों ने हमारे प्रभावी समुद्री इतिहास के विषय में विस्तार से लिखा है । तथापि वर्तमान में कुछ ही लोग आज भारत को प्रमुख सामुद्रिक अर्थव्यवस्था के रूप में देखते हैं । पोत निर्माण की उपेक्षा हुई है, बंदरगाहों की उपेक्षा हुई है और सबसे अधिक विदेशी व्यापार की उपेक्षा हुई है ।

1940 में जब श्री वालचंद हीराचंद पोत निर्माण व जहाज़रानी गतिविधियों की अगुवाई कर रहे थे उस समय एशिया में उनके कुछ ही सहयोगी थे । 1950 तक भारत एशियाई सामुद्रिक गतिविधियों में शिखर पर था । तथापि आज हम न केवल जापान बल्कि उत्तरी कोरिया व चीन से भी पिछड़ गए हैं । हमें इस स्थिति को बदलना होगा । मैं भारत को विश्व के प्रामुख व्यापारिक राष्ट्र के तौर पर उदीयमान होते हुए देखना चाहता हूं । हमें एक प्रमुख सामुद्रिक शक्ति भी बनना है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें न केवल अपनी सामुद्रिक आधारिक संरचना को आधुनिक बनाना होगा । बल्कि हमें अपनी सोच को भी आधुनिक बनाना होगा । व्यापार की अनिवार्यताओं, सामुद्रिक व ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकताओं और समुद्रगामी लोगों के रचनात्मक उद्यम को एक बार फिर से हमें कोटि का समुद्री राष्ट्र बनाना होगा ।

श्री वालचंद हीराचंद यदि आज यहां होते तो सामुद्रिक गतिविधियों के नवजात उत्साह पर ज्यादा अच्छा व्यंग्य कर पाते क्योंकि यह वास्तव में 75 वर्ष से ज्यादा उनका जुनून रहा था । मुझे ऐसा लगता है कि हमारी नीति में आर्थिक संबंधों के बाह्य आयामों की लंबे समय से बहुत अधिक उपेक्षा हुई है । हमने इस उपेक्षा को समाप्त करने की प्रक्रिया मात्र एक दशक पहले ही आरंभ की है । संभवतः इस प्रक्रिया में कई गतिरोध हैं और इसे अनमाने ढंग से प्रारंभ किया गया है ।

आज हमें जिस दिशा में आगे बढ़ना है उसके लिए राष्ट्र व्यापी मतैक्य भी है और जन मानस में जागृति भी है । मैं आश्वस्त हूं कि भारत में जागृति भी है । मैं आश्वस्त हूं कि भारत ने अपनी नियति को जान लिया है और एक प्रमुख व्यवसायी राष्ट्र बनने की ठान ली है । दोनों तरह के व्यवसाय करने का वस्तुओं का भी और सेवाओं का भी ।

पिछले दस वर्षों से हर वित्त मंत्री ने इस बात पर बल दिया है कि हमारे शुल्क स्तर को घटाकर आसियान के शुल्क स्तर पर लाना जरूरी है । हमने इस दिशा में यथा संभव प्रयास किए हैं परन्तु अभी भी काफी कुछ किया जाना बाकी है । मेरा विश्वास है कि अब हम इस प्रक्रिया को गति दे सकते हैं और हमारी अर्थव्यवस्था व आसियान क्षेत्रों व पूर्वी एशिया की अर्थव्यवस्था बीच अंतरंग परस्पर क्रिया को संभव बनाने के लिए कदम उठा सकते हैं ।

यह कोई इत्तफाक नहीं था कि श्री वालचंद हीराचंद ने अपने प्रथम पोत निर्माण उद्यम के लिए विशाखापट्टणम को बेस बनाया । कोरमंडल तट से इतर भारत का सामुद्रिक इतिहास बहुत गौरवशाली रहा है । उदाहरणार्थ, बांदर का पत्तन एक प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह था और प्रायः द्वीप भारत व पूर्वी एशिया के साम्राज्यों के बीच एक संपर्क बिन्दु था । हमारी वर्तमान लुक ईस्ट नीति का उद्देश्य और कुछ नहीं बल्कि हमारे उसी बीते समय को, हमारे उस गौरवशाली इतिहास को दुबारा खोजकर लाना है । कल मैंने गुवाहाटी में भारत आसियान कार रैली का

उद्घाटन किया यह साहस व मनोंरजन से जुड़ा ऐसा प्रयास है जिसे कारोबार के क्षेत्र में किया गया प्रयास भी माना जा सकता है । मुझे आशा है कि इससे पूर्वोत्तर क्षेत्र में हमारे आस-पास के क्षेत्रों के साथ सड़क/रेल/वायु मार्गीय संपर्क स्थापित करने की हमारी आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकेगा । मेरा मानना है कि यह और भी जरूरी है कि हम अपने पूर्वी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था के साथ अधिक सक्रियता से जुड़ने का प्रयास करें ।

श्री वालचंद हीराचंद ने भारतीय व्यवसाय की ओर से ब्रिटिश सरकार के समक्ष विचार के लिए लगातार अपने सुझाव रखकर भारतीय व्यवसाय क्षेत्र के प्रवक्ता के रूप में भी अपनी एक अलग पहचान बनाई थी । उन्होंने भारतीय चीनी मिल संघ व भारतीय चीनी मिल सिंडिकेट को प्रारंभ करने में भी सहायता की थी । इन दोनों ने मिलकर यह सुनिश्चित किया कि बाजार अर्थव्यवस्था के उतार चढ़ाव, भारतीय चीनी मिल उद्योग के विकास में बाधक न बनने पाएं । मेरा आप लोगों से आग्रह है कि आप श्री वालचंद हीराचंद जैसे व्यवसायी नेता के जीवन व योगदान पर विचार करें और हमारे देश के निजी क्षेत्र के उद्यम के विकास के लिए उचित मार्गदर्शन प्राप्त करें । हमें ऐसे ही व्यावसायिक नेताओं की जरूरत है जो अनजानी राहों पर बढ़ने का साहस रखते हों और जिनमें किन्स विदित जुनून के साथ शुम्पीटर जैसे उद्यमकर्ता बनने की चाह हो ।

निवेश वास्तव में, विश्वास व्यक्त करने का एक कार्य है । हालांकि जो अनुभव इस विश्वास को आकार देते हैं, उनमें अत्यधिक भिन्नता देखने को मिलती है । मैं आपसे आग्रह करता हूं कि अपने देश में विश्वास कायम रखें और यदि टाले जा सकने वाले जोखिम आएं तो उनका पहले ही भलीभांति अनुमान कर लें क्योंकि जहां तक भारत में निवेश अवसरों का संबंध है, बीते हुए समय से भावी समय के लिए कोई अच्छा मार्गनिर्देश मिलना मुश्किल है । भारत में निजी उद्यम एक बार फिर से फलने-फूलने लगे हैं और मुझे आशा है कि हम इस पीढ़ी में और भी वालचंद हीराचंद तैयार कर सकते हैं ताकि भारतीय उद्यम के समक्ष आने वाले सुअवसरों का पूरा लाभ उठाया जा सके ।

भारत में आर्थिक व सामाजिक विकस के क्षेत्रीय पैटर्न की जांच करने वाला कोई भी व्यक्ति, घरेलू निजी उद्यम की उत्पति व क्षेत्र के समग्र आर्थिक विकास के बीच बहुत स्पष्ट नजर आने वाले सशक्त सकारात्मक सहसंबंध से अचम्भित रह जाता है । पंजाब, गुजरात महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु व आंध्र प्रदेश में हुए औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप होने वाले शहरीकरण ने उनकी अर्थव्यवस्थाओं को उन्नत बनाया है । यह विकास न केवल सार्वजनिक निवेश और मुंबई, कोलकाता या दिल्ली के बड़े व्यापारिक घरानों के कार्य कलापों का नतीज़ा है बल्कि स्थानीय उद्यमों व क्षेत्रीय और स्थानीय उद्यमकर्ताओं की बढ़ोत्तरी से इसे और अधिक गति मिली है । चेन्नई में वेणु श्रीनिवास, बेंगलूर में नारायण मूर्ति व अज़ीम प्रेम जी, हैदराबाद में अंजी रेड्डी व रामलिंग राजू जैसे दूरदर्शी उद्यमी भी निजी उद्यमों को प्रेरित करने और इसके माध्यम से अपने क्षेत्रों का विकास करने के लिए बिड़ला, टाटा, अम्बानी, मुंजाल व रैनबैक्सी समूह जैसे वालचदों हीराचंदों की श्रेणी में आ खड़े हुए हैं ।

मैं राज्य सरकारों के अपने राजनीतिक नेताओं और मुख्य मंत्रियों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि यदि भारत के अल्प विकसित क्षेत्रों को अधिक विकसित क्षेत्रों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्हें अधिकाधिक

सार्वजनिक निवेश की आवश्यकता होगी, परंतु इसमें भी कोई दो राय नहीं है कि उन्हें और अधिक स्थानीय निजी उद्यम और फलस्वरूप स्थानीय मध्यम वर्ग के विकास की भी आवश्यकता होगी । मैं राज्य स्तर के अपने राजनीतिक नेताओं विशेषकर अल्प विकसित राज्यों के नेताओं से आग्रह करता हूं कि वे उद्यमों की आवश्यकता पर और अधिक ध्यान दें ताकि हम आधुनिक उद्योग व उद्यम को इन नए क्षेत्रों तक पहुंचा सकें ।

श्री वालचंद हीराचंद जैसे उद्यमी के जीवन के विषय में चर्चा करते हुए हमें उनके जीवन से उचित प्रेरणा लेनी चाहिए । जो शिक्षा मैंने ली है, वह यह है कि संवृद्धि व विकास की चरम प्रेरणा व्यक्तिगत रचनात्मकता व उद्योग ही है । हम लोग सरकार में रहते हुए ऐसे अनुकूलतम राजनीतिक वातावरण सृजित करने की स्थिति में हैं जिसमें रचनात्मकता व जुनूनों को फलने फूलने व प्रकट होने का पूरा मौका मिल सकता है ।

इसे सुनिश्चित करने के लिए हमें ऐसा कोई काम नहीं करना है जिससे इस प्रकार की सृजनात्मकता बाधित होती हो और हमारी सरकार भी उद्योगों को घरेलू स्तर पर पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए समर्थ बनाने के इस आदर्शवाद के लिए प्रतिबद्ध है । परंतु अंतिम विश्लेषण यही कहता है कि अपनी रचनात्मकता, अपनी साहासिकता व अपने जुनून को प्रदर्शित करने का सारा दायित्व आप लोगों पर, उद्योग जगत के कैप्टनों पर ही है ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि भारत यह कार्य कर सकता है । मुझे विश्वास है कि जिस दिन इस सृजनात्मकता को पूर्ण व स्वतंत्र अभिव्यक्ति का मौका मिल जाएगा, उस दिन न तो कोई हमें रोक पाएगा और न ही कोई भारत जैसे देश के बढ़तें कदमों को थाम पाएगा ।